JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

असुरक्षित हिन्द महासागर एवं भारत के सामुद्रिक सुरक्षा हित

Sarita Sharma

शोधार्थी

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

शोध सारांश– इस बात को गहराई से जानते हुए कि भारत का विकास हिन्द और प्रशान्त महासागर की समुद्री पट्टियों में ही सुरक्षित है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने बहुत तेजी से दूसरी क्षेत्रीय समुद्री ताकतों के साथ अपने संपर्क को तेज कर दिया है। नतीजे के तौर पर उभरती चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए एशिया–प्रशान्त, हिन्द महासागर में चीनी साम्राज्यवादी–सैन्यवादी दावे और पूर्वी दायरे के बाहर भारत खुद की दावेदारी पेश करने के लिए बाध्य हो गया जिसके तहत उसने 26 अक्टूबर 2015 को समुद्री सुरक्षा को सुनिश्चित करना भारतीय समुद्री सुरक्षा रणनीति के नाम से समुद्री रणनीति के मुकाबले का प्रावधान भी शामिल था। यह एक स्वदेशी राष्ट्रीय नौसेना परियोजना के साथ अपने पूर्ववर्तियों के प्रयासों की तुलना में एक व्यापक सामरिक दृष्टि थी। वास्तव में देखा जाए तो भारत द्वारा अति महत्वपूर्ण समुद्री व्यापार और समुद्री सुरक्षा पर बहुत कम ध्यान दिया गया। समुद्री मामलों में भी उसने बहुत कम ध्यान दिया। हाल तक भी भारत को इस मुद्दे की वास्तविकता का अहसास नहीं था। वह इस बात को भी सही ढंग से नहीं भांप पाया कि भारत एक उभरती हुई शक्ति है और इसे शांति और सहयोग के लिए वास्तिवक रूप से क्या कदम उठाना चाहिए।

संकेताक्षर– समुद्री, सामरिक, हिन्द महासागर, हिन्द और प्रशान्त।

शोध विस्तार सन् 1948 से 1947 तक के उपनिवे"ाी काल के गहन अध्ययन एवं इससे पूर्व भारतीय इतिहास पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता हैं कि भारतीय शासकों ने विभिन्न कालों में सदैव भारत को महाद्वीपीय या स्थलीय शक्ति के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया एवं प्रायद्वीपीय भारत की 7517 कि.मी. लम्बी जलीय सीमा को नजरअंदाज करते हुए हिन्द महासागर को उपेक्षित क्षेत्र माना एवं ''समुद्री शक्ति'' की अवधारणा को कम महत्व दिया।

1498 के काल तक भारत ने हिन्द महासागर की ओर से किसी भी विदे"ाी आक्रमण एवं शक्ति प्रसार की नीति का अनुभव नहीं किया था परंतु इस तथ्य को भी अनदेखा नहीं कर सकते हैं कि सबसे लम्बे समय तक

भारत में शासन करने वाली विदे"ाी शक्ति का प्रवे"ा महासागर की ओर से ही हुआ था। यूरोपीय शक्तियों के भारतीय प्रायद्वीप के तटों पर व्यापार एवं कालांतर में व्यापार सुरक्षा के नाम पर सेना की स्थापना, राजनीतिक गतिविधियों में हस्तक्षेप एवं अंततः सम्पूर्ण क्षेत्र में अपना एकाधिकार स्थापित करने की सफल यात्रा भारतीय शासकों की **''सागरीय अंधता''** की नीति का ही दुखद परिणाम था। इक्कीसवीं सदी में भी 2004 की सुनामी त्रासदी एवं 26 नवम्बर 2008 को मुम्बई के ताज होटल पर आतंकवादी हमला ये दो ऐसे प्रत्यक्ष उदाहरण हैं जो महासागर की ओर से ''असुरक्षा'' को इंगित करते है। वहीं दूसरी ओर हिन्द महासागर में विदे"ाी शक्तियों की सैन्य प्रतिस्पर्धा, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं उसके मित्र राष्ट्रों के सहयोग से हिन्द महासागर का ''नाटो झाील'' में रूपान्तरण, चीन व पाकिस्तान के मध्य सैन्य संबंध एवं महासागर की ओर से भारत को घेरने की रणनीति, खुले महासागर में भारतीय जहाजों पर हमला एवं महासागरीय मार्ग से जाने वाले माल वाहक जहाजों पर से सामान की चोरी, पर्यावरणीय परिवर्तन आदि ऐसे उदाहरण हैं जो अप्रत्यक्ष रूप से भारत की दक्षिणी सीमा की असुरक्षित स्थिति को स्पष्टतः उजागर करते हैं।[1]

जहां 1498 के काल में भारतीय साम्राज्य विखण्डित था तथा कालान्तर में उपनिवे"ाी स्थिति में होने के कारण विदे"ाी शक्तियों की मनमानी का विरोध करने की स्थिति में नहीं था वहीं आज स्वतंत्र, संगठित एवं आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर भारत सम्पूर्ण हिन्द महासागर क्षेत्र में महती भूमिका निभाने की क्षमताओं से युक्त हैं। **''भारत एक शक्तिशाली सामुद्रिक राष्ट्र है, आज यह हिन्द महासागर क्षेत्र में विदेशी शक्तियों की मनमानी का विरोध कर सकता हैं।''**[2]

प्रायद्वीपीय भारत की आर्थिक समृद्धि एवं राजनीतिक स्थिरता के लिए आव"यक है कि भारतीय रणनीतिकार हिन्द महासागर को अपनी नीति का केन्द्र बनाए। पिछले अध्यायों में हिन्द महासागर के आर्थिक एवं सामरिक महत्व पर विस्तार से प्रका"ा डाला गया है जिससे स्पष्ट होता हैं कि प्रायद्वीपीय भारत की भौगोलिक दृष्टि से क्षेत्र में केन्द्रीय स्थिति, दोनों ओर वि"ाल द्वीप श्रृंखलाएं एवं उनके इर्द गिर्द विस्तृत वि"िाष्ट आर्थिक क्षेत्र में समुद्री संसाधनों का प्रसार, 90% व्यापार हेतु समुद्री मार्ग पर निर्भरता, औधोगिकरण एवं अर्थव्यवस्था हेतु फारस की खाड़ी क्षेत्र में उपलब्ध ऊर्जा भण्डारों पर निर्भरता तथा अनवरत् ऊर्जा हेतु स्वेज मार्ग, बेब अल मंदाब एवं होर्मुज जलसंधि नामक तेल अवरूद्ध बिंदुओं की सुनि"चित सुरक्षा, वि"ाल सामुद्रिक क्षेत्राधिकार, खुले सागर में 7517 कि.मी. लम्बी जलीय सीमा, पूर्व में आसियान एवं पि"चम में ओपेक जैसे शक्ति"ाली क्षेत्रीय संगठनों के मध्य स्थिति, दक्षिण एि"ायाई राष्ट्रों के क्षेत्रीय संगठन ''सार्क'' में बड़े भाई की भूमिका, ''पूर्व की ओर देखों '' नीति की सफलता हेतु मलक्का जलसंधि की सुनि"चित सुरक्षा, क्षेत्र में पाकिस्तान व चीन से कटु संबंध तथा हिन्द महासागर में स्थित अन्य छोटे–छोटे तटीय राष्ट्रों द्वारा भारत से क्षेत्र में सकारात्मक भूमिका की अपेक्षा आदि ऐसे कारक हैं जो भारत को **''हिन्द महासागरीय राष्ट्र''** के रूप में प्रतिस्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः भारतीय व्यापार की कु"ालता, ऊर्जा सुरक्षा एवं प्रायद्वीपीय भारत की सुरक्षा के लिए

आव"यक है कि भारत समुद्र की ओर से आने वाले खतरों को पहचानते हुए **''सामुद्रिक सुरक्षा''** को सुनि"चत करे। **''हिन्द महासागर में शांति एंव स्थिरता भारत की आर्थिक समृद्धि एवं राजनीतिक सुदृढ़ता की पूर्व शर्त हैं।''**[3]

''किसी भी राष्ट्र के महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हितों का कुल योग उस राष्ट्र की सुरक्षा का निर्माण करते हैं जिसके लिए कोई भी राष्ट्र कभी भी, किसी भी परिस्थिति में युद्ध तक करने के लिए तैयार रहता है। जिस प्रकार किसी राज्य के मूल्य व राष्ट्रीय हित उस राज्य की सुरक्षा के लिए आव"यक हैं उसी प्रकार उस राज्य की सुरक्षा उसके मूल्यों व हितों के लिए भी अनिवार्य हैं।''[4]

सामुद्रिक सुरक्षा एक वृहद अवधारणा है जिसके अंतर्गत बहुत से पक्ष समाहित हैं परंतु फिर भी इसकी कोई सार्वभौमिक स्वीकृत परिभाषा नहीं है। शीतयुद्ध के अंत के बाद सम्पूर्ण वि"व में गम्भीर परिवर्तन देखे गए। द्विध्रुवीय वि"व व्यवस्था से आज हम एकध्रुवीय वि"व की ओर बढ़ चुके हैं परंतु इस एक महा"ाक्ति के साथ–साथ वि"व में और भी ऐसी कई बड़ी शक्तियाँ हैं जो किसी भी समय अपनी कूटनीति के माध्यम से एकध्रुवीय वि"व को चुनौति देने की क्षमता रखती हैं। आज के परिवर्तन युग में ''सुरक्षा की परिभाषा '' में भी बड़ा अंतर आया है। **''राष्ट्र केन्द्रित परम्परागत सुरक्षा''** की अवधारणा अब समाप्त हो चुकी है जहां अब तक परम्परागत सुरक्षा को राष्ट्रीय हितों तक सीमित रखकर इसे राष्ट्र की स्वतंत्रता, सम्प्रभुता एवं अखण्डता की रक्षा के रूप में परिभाषित किया जाता था, आज इक्कीसवीं सदी में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के इस महाजाल में अपने आप को किसी एक या दो राष्ट्र से सुरक्षित रखना ही पर्याप्त नहीं है। आज किसी राष्ट्र से अपने आपको सुरक्षित रखने के साथ स्वयं को उन खतरों से सुरक्षित रखना भी आव"यक हो गया है जिन्हें राज्यों की परिधि में परिभाषित कर पाना असम्भव है।

इस संदर्भ में हिन्द महासागर शीत युद्ध उपरांत अनेक गैर परम्परागत खतरों का सामना कर रहा है और इस दृष्टि से अति संवेदल"ाील एवं असुरक्षित है। इस विषय पर अध्ययन करते हुए ''जापान इंस्टीट्यूट फॉर ने"ानल फन्डामेन्टल'' की अध्यक्षा यो"ाको सकुराई द्वारा जून, 2010 में सम्पन्न एक संगोष्ठी में कहा गया कि **''इक्कीसवीं सदी में हिन्द महासागर संघर्ष व तनाव के सागर में परिवर्तित हो रहा है अतः इसकी परिस्थितियों पर विचार करना अति आवश्यक है।''**[5]

ब्रम्हा चेलानी के अनुसार **''हिन्द महासागर के समान विश्व के किसी भी क्षेत्र में सुरक्षा की स्थिति इतनी संवेदलशील और नाजुक नहीं है, यह भू–राजनीतिक क्षेत्र इक्कीसवीं सदी के वैश्विक खतरों का मुख्य केन्द्र है जिसमें उग्रवाद से आतंकवाद और समुद्री मार्गों की सुरक्षा की समस्याएं प्रमुख हैं।''**

सुरक्षा की व्यापक अवधारणा पर विचार करते है तो ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण वि"व के साथ–साथ हिन्द महासागर भी ''राष्ट्र केन्द्रित'' अवधारणा से ''बहुलवादी अवधारणा'' के अंतर्गत असुरक्षात्मक चुनौतियों से ग्रस्त हैं जिसमें किसी राष्ट्र वि"ोष के सैन्य खतरों से अपने आप को सुरक्षित कर लेना एक अपूर्ण सुरक्षात्मक व्यवस्था का प्रतीक है। सैन्य खतरों की परिधि से बाहर परिभाषित होने वाले खतरे '' गैर परम्परागत असुरक्षा '' की परिधि में आते है। मानव मात्र एंव राज्यों के अस्तित्व के साथ–साथ विकास एवं कु"ालक्षेम में आने वाली चुनौतियाँ जिनका समाधान सैन्य उपबंधों से सम्भव नहीं है जैसे जलवायु परिवर्तन, संसाधनों का अभाव, संक्रामक रोग, प्राकृतिक आपदाएं, अनियंत्रित स्थानांतरण, भोजन की कमी, मानवों, हथियारों एवं न"ाीले पदार्थों की तस्करी तथा अंतर्राष्ट्रीय अपराध आदि। प्रमुखतया इन खतरों की प्रकृति अंतर्राष्ट्रीय होती है और जिनके समाधान के लिए सैन्य बल का प्रयोग राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक दायित्वों के साथ–साथ मानवता संबंधी दायित्वों की पूर्ति के लिए भी करना पड़ता है।'' इस संदर्भ में सामुद्रिक सुरक्षा एक प्रमुख आयाम है।

''समुद्री सुरक्षा अपनी वृहद् अवधारणा में बहुत से आयामों का संकलन है जिनका सम्पादन महासागर में होता है परंतु यह राष्ट्र की सुरक्षा को प्रभावित करते है।''[6]

हिन्द महासागर भारत के लिए जीवनाधार सागर के समान है। सामुद्रिक राष्ट्र होने के साथ–साथ महासागर में द्वीपीय पड़ौसी राष्ट्रों की स्थिति महासागरीय सुरक्षा को और भी अधिक महत्वपूर्ण बना देती हैं। अतः हिन्द महासागर में अपने वृहद् हितों की सुरक्षा के लिए आव"यक है कि भारत ''महासागरीय खतरों'' को पहचाने एवं इनके समाधान की व्यवस्था करे।

अन्य किसी भी सामुद्रिक राष्ट्र के समान भारत के लिए भी हिन्द महासागर में स्थित महत्वपूर्ण अंर्राष्ट्रीय जलमार्गों की सुरक्षा प्रमुख चिंता का विषय है। नव उभरती अर्थव्यवस्था के रूप में भारत की कच्चे तेल एवं प्राकृतिक गैस जैसे आधारभूत ऊर्जा संसाधनों पर निर्भरता बढ़ती जा रही है। एक अध्ययन के अनुसार भारत वि"व का सातवां सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता राष्ट्र है एवं सन् 2020 तक इसका वि"व में यह स्थान सातवें से पांचवा होने की आ"ांका है। तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या एवं औधोगिकरण का उन्नत स्तर ये दो ऐसे कारक हैं जो आने वाले कुछ द"ाकों में भारतीय ''ऊर्जा मांग'' को दुगुना कर देंगे। डायरेक्टर जनरल ऑफ फॉरिन ट्रेड के प्रतिवेदन के अनुसार सन् 2011–12 में फारस की खाड़ी क्षेत्र से भारत का प्रमुख आयात कुल वै"विक आयात का 27.35% था। भारतीय योजना आयोग के एक अध्ययन ''इण्डिया हाईड्रोकार्बन विज़न ''2025 के अनुसार भारत की ऊर्जा की मांग एवं पूर्ती के मध्य एक बड़ा अंतर है। **सन् 2030 तक भारत की ऊर्जा आवश्यकता 90% भाग ऊर्जा आयात पर निर्भर होगा तथा 2024 तक भारत ऊर्जा आयातक राष्ट्रों में सयुक्त राज्य अमेरिका एवं चीन के पश्चात् तीसरा प्रमुख राष्ट्र बन जाएगा।''** इस दृष्टि से भारत की फारस की खाड़ी क्षेत्र पर निर्भरता और भी अधिक हो जाती है एवं फारस की खाड़ी को भारत से जोड़ने वाले जलमार्ग में

''होर्मुज जलसंधि'' की सुरक्षा भारतीय अर्थव्यवस्था की प्राणवायु के समान भूमिका निष्पादन करता है। ईरान द्वारा ''होर्मुज अवरूद्ध बिंदु'' को बंद करने की धमकी भारत की ऊर्जा निर्भरता एवं अण्डमान सागर में विस्तृत विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था के मूल आधार हैं।[7]

इस प्रकार भारत की ''पूर्व की ओर देखो'' नीति तथा दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्रों से विकसित होते व्यापारिक संबंधों की दृष्टि से ''मलक्का जलसंधि'' महत्वपूर्ण है। हिन्द महासागर से भारत का 90% व्यापार सम्पन्न होता है इसमें भी भारतीय व्यापार का बड़ा हिस्सा भारत की ''दक्षिण–दक्षिण संवाद'' नीति के अंतर्गत अफ्रीका तटीय राष्ट्र, दक्षिण पूर्वी एशिया, मध्य एशिया, दक्षिण एशिया एवं ऑस्ट्रेलिया तथा जापान से सम्पन्न होता है। अतः अपनी व्यापारिक गतिविधियों के सुचारू संचालन के लिए भी हिन्द महासागरीय संचार रेखाओं की सुरक्षा अति आवश्यक है। **हिन्द महासागरीय जल मार्ग भारत की ऊर्जा सुरक्षा एवं व्यापार वाणिज्य की समृद्धि का मूल आधार है एवं इन मार्गो की सुरक्षा ''भारतीय सामुद्रिक हितों'' का प्राथमिक विचारणीय केन्द्र है।**[8]

निष्कर्ष– भारतीय संस्कृति तो मानो प्रारम्भ से ही इसकी आरती उतारती रही है। भारत की प्राचीन सीमाओं की चर्चा करते हुए विष्णु पुराण मे कहा गया है–''उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चौव दक्षिणम, वर्ष तद् भारतं नाम भारती यत्र संतितः।'' भारत ही नहीं, इसके किनारे बसे कई अन्य देशों की संस्कृतियाँ भी हिन्द महासागर के अवर्णनीय योगदान की पृष्ठभूमि में खूब फली–फूलीं। व्यापार के साथ–साथ विशेषकर उपनिवेशवादी प्रवृत्तियों का भी विकास हुआ। यूरोप के अनेक देश भारत और सुदूर पूर्वी देशों से सर्वप्रथम सामुद्रिक मार्ग से ही जुड़े और इसमें हिन्द महासागर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। बढ़ती जनसंख्या, सीमित होती कृषि भूमि, उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों की घटती मात्रा, पर्यावरण प्रदूषण और बढ़ती सामरिक गतिविधियों आदि के कारण हिन्द महासागर सहित विभिन्न समुद्रों आदि का महत्व वर्तमान समय में और भी बढ़ गया है और इस क्षेत्र में निरंतर नये आयाम जुड़ रहे हैं। हिन्द महासागर में विभिन्न खनिजों विशेषकर 'बाम्बे हाई' क्षेत्र में प्राकृतिक तेल की भरपूर उपलब्धता ने भारतीय अर्थव्यवस्था में असाधारण योगदान दिया है।

संदर्भ सूची–

1. कमल कुमार (2000), 'इण्डियन ओसन एज ऐ जोन ऑफ पीस प्रॉब्लम एण्ड प्रोस्पेक्ट', नई दिल्ली, ए.पी. एच. पब्लिकेशन्स पृ. 35
2. कॉफी, जोसफ (2003), 'स्ट्रेटिजिक पॉवर एण्ड नेशनल सिक्योरिटी', पिट्सबर्ग, यूनिवर्सिटी ऑफ पिट्सबर्ग प्रेस पृ. 525
3. काक, कपिल (2010), 'कान्प्रेन्शिव सिक्योरिटी फॉर इन इमर्जिंग इण्डिया', नई दिल्ली, नॉलेज वर्ल्ड पब्लिशर्स पृ. 112

4. https://www.abplive.com/news/india/galwan-valley-violence-indian-army-and-pla-clash-on-lac-15-june-bravery-of-indian-soldiers-india-china-border-dispute-2146447
5. https://www.abplive.com/news/india/galwan-valley-violence-indian-army-and-pla-clash-on-lac-15-june-bravery-of-indian-soldiers-india-china-border-dispute-2146447

6- https://in.ambafrance.org/Exercise-Varuna-2023#:~:text=A%20major%20annual%20aero%2Dnaval,trust%20between%20France%20and%20India

7. https://www.pmc.gov.au/quad-2023
8. https://www.pmc.gov.au/quad-2023